IJARSCT

International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology

International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal

ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 13, May 2026 Impact Factor: 8.2

pukoh jktuhfr esa i=dkfjrk dh mikns;rk ¼mi;ksfxrk½ ,oa Hkwfedk

Mk- lkou dqekj lsu

jktuhfr foKku

Pawansen8899@gmail.com

lkjka'k &

आज के युग में पत्रकारिता के भी अनेक माध्यम हो गये है। जैसे अखबार , पत्रिकायें रेडियों दूरदर्शन वेब–पत्रकारिता आदि। बदलते वक्त के साथ बाजारबाद और पत्रिकारिता के अन्तर्सम्बन्धों ने पत्रकारिता की विषय–वस्तु तथा प्रस्तुति शैली में व्यापक परिवर्तन किए। राजनीतिक संचार मानव–समाज का सुनियोजित तंत्र है। पत्रकारिता आधुनिक सभ्यता का एक प्रमुख व्यवसाय है जिसमें समाचारों का एकत्रीकरण लिखना जानकारी एकत्रित करके पहुँचना सम्पादित करना और सम्यक प्रस्तुतीकरण आदि सम्मिलित है। राजनीतिक संचार प्रणाली का ढांचा अपने सुपरिभाषित माध्यम के साथ मानव समाज के आवरण की तरह है। राजनीतिक संचार का प्रवाह गतिशील सामाजिक तथा विकास की दिशा एवं गति को निर्धारित करता है। कोई भी व्यक्ति, किसी देश में प्रचलित राजनीतिक संचार गतिविधियों की संरचना, अंश एवं प्रवाह के संबंध में उस देश की सामाजिक एवं राजनीतिक प्रक्रिया का विश्लेषण कर सकता है। समाज को बौद्धिक–मानसिक नेतृत्व देने की क्षमता पत्रकारिता का में है। उसके ज्ञान प्राविण्य तथा अनुशासन युक्त पत्रकार के बूते यह संभव है। छोटे से छोटे क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करने वाले अपने–अपने क्षेत्र के संवाददाता से लेकर सपूर्ण सम्पादकीय टीम से है।

eq[; "kCn& पत्रकारिता, स्थानीय जनजीवन, राजनीतिक ,आतंरिक संबंध, मीडिया, सम्पादकीय, समाज

iLrkouk &

पत्रकार की गुणवत्ता तभी निखार पा सकती हैं, जब पूरी विवक क्षमता के साथ वह एक बेहतर प्रस्तुति के लिय श्रम करें और उसके उद्देश्यों में अनुशासन एवं एकरूपता हो। इस हेतु श्रेष्ठ सामग्री का पूरी निष्ठा, निष्पक्षता तथा सकारात्मक चिंतन से चयन जितना जरूरी हो, उतनी ही जरूरी कुछ बातें हैं, जिनमें सर्व प्रमुख है तथ्य का विश्वसनीय होना। इसके साथ ही भाषा, शीर्षक समाचार से अत्याधुनिक एवं नवीनतम् जानकारी से पूर्णता महत्वपूर्ण तथ्य है। पत्रकारिता में उभरा संवाद तात्कालिक एवं कम आयु का रहता है जो हर दूसरे दिन किसी नये रूप में जन्म लेता है। पत्रकारिता की पहली शर्त है कि पाठकों के बीच जो कुछ लिखकर या दृश्यमान जाये वह सरल भाषा में हो। उस प्रस्तुतिकरण का पूरा ढॉचा मस्तिष्क में बने उसका अन्तर्गत तक प्रभावी एवं संतुष्टिकारक होना जरूरी है। उसका स्वरूप स्थानीय जनजीवन के लिए सहज स्वीकार्य रहे तथा चित्र में या लेखन की अभिव्यक्ति में यह संतुष्टिकारक हो। लेखन में तथ्यपरकता, स्पष्टता एवं आकर्षक प्रस्तुति हो। इसे ध्यान में रखे संभव हो तो कथोपकथन एवं ग्राफिक, दोहराव, लेखन का बहुत बड़ा स्वरूप या आडम्बरपूर्ण शब्दों का प्रयोग वर्जित है। मीडिया या पत्रकारिता चूँकि संपूर्ण जन–जीवन के हालातों को जोड़ता है, अतः वह किसी एक वर्ग की आशा–आकांक्षाओं का पूरक नहीं रहेता भले

IJARSCT

International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology

International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal

ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 13, May 2026 Impact Factor: 8.2

मीडिया संस्थान का संचालनकमंडल, उस क्षेत्र में पूँजी निवेश कर मीडिया तंत्र को स्थापित करेन किन्तु उसके सद्भावी उद्देश्यों की पूर्ति करेन हुए मीडियाकर्मी को लोकधर्म को यानी खबरों की निष्पक्षता से जन–जुड़ाव की सर्वोच्च प्राथमिकता देनी ही होगी। यदि ऐसा करने में वह विफल होता है तथा परिणाम स्वरूप मीडिया में अविश्वास हुआ या उसकी गरिमा आहत हुई तो यह जन आक्रोश या जन–उपेक्षा का शिकार होकर क्षतिग्रस्त हो जाता है। उसे जनता के हर वर्ग से न्याय करना ही होगा और ऐसा न होने पर मीडिया या पत्रकारिता ही दोषी मानी जाएगी। जैसा कि इन दिनांक इलेक्ट्रानिक मीडिया एवं प्रिंट मीडिया में कभी –कभी सुना जाता है।

उद्देश्य–

प्रस्तुत शोध पत्र का मुख्य उदे्श्य वर्तमान समय में प्रत्रकारिता एवं राजनैतिक अतः संबंध एवं उपयोगिता को ज्ञात करना है। इसमें यह भी लक्षित रहा है कि राजनैतिक गतिविधियों में मीडिया की क्या भूमिका रही है।

ifjdYiuk &

वर्तमान समय में राजनैतिक गतिविधियों को जनता तक पहुचाने नई विकास योजनाओं एवं राजनैतिक बदलाव की जानकारी का एक मात्र माध्यम मीडिया ही है।

“kks/k i)fof/k &

प्रस्तुत शोध प्रबंध में मुख्य रूप से द्वितीयक एवं तथ्यात्मक आकड़ों का उपयोग किया गया है। आवश्यकतानुसार प्राथमिक समकों का प्रयोग किया गया है।

fo'ys"k.k &

मानवीय व्यवहार, खान–पान, व्यवसाय कारोबार, शिक्षा जातीय व्यवस्था समाजिक जीवन की चहलपहल जिनमें क्रीड़ा और कला के अतिरिक्त राजनैतिक, आर्थिक गतिविधियों है।, मीडिया के माध्यम से जनता के बीच जाये तो वे विश्वनीय हों एवं मानव जाति के अहितकर न हों। मीडिया यानी पत्रकारिता को मानवता के संदर्भ में स्वेच्छाचारी या अत्याचारी नहीं कहलाना चाहिये। वह वर्ग समानता असमानता के बीच कोई अवांछित हथियार न बनें। यह समय खबरों के भीतर की खबरों की तथा नई तकनीकों के दौर का है। इसे ठीक से समझकर अधुनिक व्यवस्थाओं से टी.बी. एवं लेखन की पत्रकारिता को नित्य परिमार्जित करना होगा, तब ही वह व्यवस्था बाजार या समाज में स्वीकार्य होगी। मैंने एक संदर्भ हम और हमारी की पुस्तक में यह निवेदन नई पीढ़ी के पत्रकार साथियों से किया है कि समाचार पत्र जगत के अधिकारों की शक्ति के साथ–साथ अब समाचार पत्रों में कार्यरत् पर कर्तव्य का भी बड़ा बोझ है। उन्हें सत्य को हर कीमत पर ठीक से एवं गंभीरता के साथ प्रस्तुत करना हैं तथ्यों को संतुलित रूप से प्रस्तुत करना है तथा उसे मानवता के लिए प्रमाणिकता के साथ और पूर्णता के साथ प्रस्तुत करना है। व्यावसायिक पत्राकारिता में यह बहुत ही कठिन कार्य है। प्रेस कौंसिल या अम्बरडरमैन जैसी व्यवस्थाओं से जुड़कर प्रेस यदि अपनी स्वतंत्रता को खोता है तो यह समाचार पत्र जगत की अपनी गलतियों को खामियाजा होगा। अब यह पत्रकार पर निर्भर करेगा कि वह जिस व्यवसाय की पवित्रता से जुड़ा है उसकी स्वतंत्रता और शक्ति को वह किस तरह उतनी उचाई और

पवित्रता से जोड़कर रखें, क्योंकि इस हेतु उसे प्रतिदिन किसी न किसी समाचार को बनाना है ओश्र उसमें शब्दों या मुहावरों का प्रयोग करना है। ऐसा ही नहीं है कि इस बड़ी जिम्मेदारी या शब्दों के द्वंद में अपनी भीतर के पत्रकार को ही नष्ट कर ले। यदि उसे विजेता बनना है तो उसे पत्रकारिता के शब्द –संसार में जीना सीखना होगा, उसके शब्दों में सुधार की क्षमता पैदा करनी होगी, उसे स्वयं के पत्रकार से साक्षात्कार करने के लिए पत्रकारिता और उसकी परम्परा की हर शिक्षा लेनी होगी, परवाह किये बिना हशीवह किसी डेस्क का इंचार्ज है या उसकी प्रसिद्धि पर उसे कौन सराहेगा ? उसे प्रजातंत्र के सार्वभौमिक स्वीकार्य सिद्धांतों और स्वयं पत्रकारिता के प्रति स्वयं को प्रतिबद्ध रखना होगा। यह एक आदर्श चुनौती पर पत्रकार के लिए वर्तमान समय के साथ आज खड़ी है। यदि आज का पत्रकार जापान के सूमो पहलवान की तरह भारी–भरकम माहौल लेकर कलम को तलवार बनाकर हवा में तलवार लहराए या हवा में मुक्केबाजी करे तो शायद वह समाज का हितचिंतक बनने की बजाए समाज में कृप्रतिष्ठा अर्जित करेगा।

आज बदलते आयाम में प्रिन्ट मीडिया एवं इलेक्ट्रनिका का समाज के उत्थान में महत्वपूर्ण योजना है। पुस्तक में यह निवेदन नई पीढ़ी के पत्रकार साथियों से किया है कि समाचार पत्र जगत के अधिकारों की शक्ति के साथ–साथ अब समाचार पत्रों में कार्यरत् पत्रकारों पर कर्तव्य का भी बड़ा बोझ है। उन्हें सत्य को हर कीमत पर ठीक से एवं गंभीरता के साथ प्रस्तुत करना हैं तथ्यों को संतुलित रूप से प्रस्तुत करना है तथा उसे मानवता के लिए प्रमाणिकता के साथ और पूर्णता के साथ प्रस्तुत करना है। व्यावसायिक पत्रकारिता में यह बहुत ही कठिन कार्य हैं प्रेस कौंसिल या अम्बरडमैन जैसी व्यवस्थाओं से जुड़कर प्रेस यदि अपनी स्वतंत्रता को खोता है तो यह समाचार पत्र जगत की अपनी गलतियों का खामियाजा होगा । अब यह पत्रकार पर निर्भर करेगा कि वह जिस व्यवसाय की पवित्रता से जुड़ा है उसकी स्वतंत्रता और शक्ति को वह किसी तरह इतनी ऊँचाई और पवित्रता से जोड़कर रखें, क्योंकि इस हेतु उसे प्रतिदिन किसी न किसी समाचार को बनाना है और उसमें शब्दों या मुहावरों का प्रयोग करना है। ऐसा ही नहीं है कि इस बड़ी जिम्मेदारी या शब्दों के द्वंद में अपनी भीतर के पत्रकार को ही नष्ट कर ले। यदि उसे विजेता बनना है तो उसे पत्रकारिता के शब्द –संसार में जीना सीखना होगा, उसके शब्दों में सुधार की क्षमता पैदा करनी होगी, उसे स्वयं के पत्रकार से साक्षात्कार करने के लिए पत्रकारिता और उसकी परम्परा की हर शिक्षा लेनी होगी, इसकी परवाह किये बिना ही वह किसी डेस्कका इंचार्ज है। या उसकी प्रसिद्धि पर उसे कौन सराहेगा । उसे प्रजातंत्र के सार्वभौमिक स्वीकार्य सिद्धांतों और स्वयं पत्रकारिता के प्रति स्वयं को प्रतिबद्ध रखना होगा। यह एक आदर्श चुनौती हर पत्रकार के लिए वर्तमान समय के साथ आज खड़ी है। यदि आज का पत्रकार जापान के सूमो पहलवान की तरह भारी भरकम माहौल लेकर कलम को तलवार बनाकर हवा में तलवार लहराए या हवा में मुक्केबाजी करे तो शायद वह समाज का हितचिंतक बनने की बजाए समाज में कुप्रतिष्ठा अर्जित करेगा। अपने अतीत के प्रति गौरवान्वित भारतीय पत्रकारिता का मिशन राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन के दिनों में स्वतंत्रता आकाक्षी राष्ट्र का निर्माण था। वह राष्ट्र के उत्थान के लिए शक्तिशालियों की दासी बन उनकी चाटुकारिता में ही अपना हित देखती है। निश्चित ही इन भाव–विचारों के बीच आज के दौर में इस बात को भी नहीं नकारा जा सकता है कि युग के अनुकूल परिस्थितियाँ बनती और बिगड़ती हैं। पहले धर्मदण्ड राज्य व्यवस्था से ऊपर माना जाता था तथा वह राजा के कर्तव्यों के निर्धारण के साथ आवश्यता पड़ने पर उसके अनैतिक आचरण के विरुद्ध दण्ड भी देने की शक्ति रखता था, जबकि वर्तमान संवैधानिक व्यवस्था के अन्तर्गत सेक्युलर राज्य की अवधारणा ने धर्मदण्ड की शक्ति का ह्रास किया है, अब राज्य की लोकतांत्रिक व्यवथा में जनता का चुना हुआ प्रतिनिधि (नेता) ही सर्वशक्तिमान है और राजनीतिक सत्ता सर्वोपरि है। भारतीय संविधान के तीन प्रमुख स्तम्भ हैं सत्ता चलाने वाले (एक्जिक्युटिव्ह), कानून बनाने वाले (लेजिस्लेटिव्ह) तथा न्याय देने वाले

(ज्यूडिशिअरी)। इन तीन स्तम्भों के सहारे ही भारतीय राज्य व्यवस्था का सम्पूर्ण तानाबाना बुना हुआ है। मंत्री परिषद् कोई योजना या नियम बनाती है, उसकी अच्छाई–बुराई को जनता के सामने रखना मीडिया की जिम्मेदारी है। जिसे वह अपने जन्मकाल से स्वतंत्र रूप से करती आ रही है। इसके बारे में भारतीय संविधान की 19वीं धारा में अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता में अधिकार के अंतर्गत विस्तार से दिया गया है। इस अनुच्छेद ने मीडिया को सार्वभौमिक शक्ति प्रदान की है जिससे वह प्रत्येक स्थान पर अपनी पैनी नजर रखते हुए स्व विवेक के आधर पर घटना से सम्बन्धित सही–गलत का निर्णय कर सके। यह ओर बात है कि जाने–अनजाने मीडिया की इस नजर से अनेक भ्रष्ट लोग हर रोज आहत होते हैं। ऐसे लोग आए दिन माँग भी करते हैं कि मीडिया पर ऍकुश लगना चाहिए। उनका तर्क है कि जब कानून का शिकंजा सभी पर कसा हुआ है फिर मीडिया क्यों उससे अछूती रहे? खासकर मीडिया और राजनीति के अंतर्सम्बन्धों को लेकर यह बात बार–बार उछाली जाती है।

भारत ने जिस शासन प्रणाली को स्वीकारा है वह जनता का जनता द्वारा जनता के लिए संचालित लोकतंत्रात्मक शासन है, जिसमें प्रगति के पथ पर पीछे छूट चुके वयक्ति की चिंता रखना और उसके हित में कार्य करने को सबसे अधिक वरीयता दी गई है। इस व्यवस्था में जनता से चुने गए प्रतिनिधि शासन का संचालन करते हैं, यह प्रणाली जन प्रतिनिधियों को अपार अधिकार प्रदत्त करती है। चूँकि मीडिया जनता के प्रति जबावदेह है इसलिए वह भारतीय समाज के लक्ष्य के प्रति समर्पित थी। तब की पत्रकारिता और आज की पत्रकारिता में तात्विक परिर्वन यही है कि आज वह खबरों के कारोबार का स्वरूप ले रही है। उसकी खबरों में देश की राजनीति कारोबार नई–पुरानी पीढ़ी अथवा समाज के हर घटक की गतिविधि का बिम्ब है। पत्रकारिता की इस स्थिति में यह बदलाव केवल भारत में नहीं है। जैसे–जैसे विश्व की सूना प्रौद्योगिकी विकसित हुई उसका ब्राड स्वरूप सम्पूर्ण विश्व में बनता गया है। भारतीय समाचार पत्र जगत में पाश्चात्य समाचार पत्र की तकनीकी अनुगमन ही नहीं हुआ अपितु वैचारिक घरातल पर भी बहुत कुछ स्वरूप स्वीकारने की स्थितियाँ बनीं धन और संचार की पाश्चात्य जीवन शैली से जुड़ी पत्रकारिता ने भारत की आजादी के पश्चात् तेजी से अपने पैर भारत में पसारे तथा धीरे–धीरे भारत को अपने उत्पादन ही नहीं विचारों तक का धरातल दे दिया। आज विश्व की बहुराष्ट्रीय कंपनियों का बाजार यदि भारत बन चुका है तो यह स्थिति भी बन रही है कि भारतीय पत्रकारिता में विदेशी पूँजी का विनिमय हो। इस नये दौर से भारतीय समाज की आत्मा चिंतित जरूर हो रही है किन्तु कथित विदेशी मीडिया जिस दिन भारत के लोकतंत्र को अपनी लाठी से हाकेगा तब की स्थिति और क्या होगी? इसे सोचना आवश्यक है। 1975 का भारत का आपातकाल यदि राष्ट्रीय शोक था तो देश की स चौथी सत्ता के लिए वर्तमान के दौर से निर्मित हो रही नई चुनौतियाँ भी कम गंभीर नहीं है। हमारे स्वाधीन भारत के समाज और उसके संवैधानिक सिद्धांत जो पत्रकारिता की सफलता और व्यक्ति के स्वत्व–रक्षण की गारन्टी अथवा हित रक्षा का सबाल है उसे अक्षुण्ण रखना तथा कैसे रखा जाए? इस पर पुनर्विचार की अब महती आवश्यकता है। यह इसलिए भी जरूरी है कि इस समय विश्व, देश एवं समाज में असामान्य रूप से बढ़ रही जनपीड़ा एवं असुरक्षा के मूल में देश–विदेश की विभेदकारी शक्तियाँ तेजी से न केवल बढ़ी हैं, अपितु वे शक्तिशाली भी हुई हैं।

मीडिया में प्रिंट हो या इलेक्ट्रानिक दोनों के विषय में जनमानस के बीच अनेक प्रकार के विचार सुनने को मिलते हैं, कोई इसे वर्तमान और भविष्य की दिशा तय करने वाला सशक्त माध्यम मानता है तो कुछ इसके बारे में ऐसी भी धारणा रखते हैं कि आजादी के बाद इसने अपना नैतिक स्तर खो दिया है। यह सिद्धांतों के लिए समर्पित नहीं, व्यक्ति सापेक्ष हो गई है। पत्रकारिता समाज व राष्ट्र की प्रबोधिनी न होकर बाहुबलियों और इलेक्टॅनिक मीडिया द्वारा जो बड़े–बड़े खुलासे किये गये, वह समय–समय पर पत्रकार को मिली राजनेताओं की मदद–सूचना एवं सहयोग का परिणाम है। वस्तुतः पत्रकार को राजनेता से बने

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 13, May 2026
Impact Factor: 8.2

आपसी सम्बन्धों का लाभ जीवन भर मिलता है। एक पत्रकार उस नेता को जिसका उससे मित्रवत् व्यवहार है आवश्यकतानुसार उसे प्रोत्साहित करता है, उसके हित में समाचार लिखता है। बदले में उससे ऐसे अनेक समाचार प्राप्त करता है जो न केवल पत्रकार की खोजी प्रवृत्ति के कारण उसके संस्थान में प्रतिष्ठा हैं, बल्कि उसे मीडिया जगत में एक विश्वसनीय बांड की तरह स्थापित करते है।

आप राजनीति और मीडिया के इन अतर्सम्बन्धों को चाहें तो स्वाथ के सम्बन्ध ही कह सकते हैं बावजूद इसके यह नकारा नहीं जा सकता कि पत्रकार द्वारा धन–यश प्राप्ति के लिए किया गया प्रयास सदैव आमजन के हित में रहा है। जब एक नेता, दूसरे नेता की तथा प्रशासक–कर्मचारी दूसरे अधिकारी–कर्मचारी की खामियों, नीतियों, उनके काले कारनामों को उजागर करते हैं तब प्रत्यक्ष–अप्रत्यक्ष वह जनहित से जुड़े विषयों को मीडिया में रखने का कार्य करते हैं। भ्रष्टाचार की कलई खुलने पर जो राशि प्राप्त की जाती है उसका बहुत बड़ा भाग केन्द्र व राज्य सरकारों द्वारा जन कल्याणकाारी योजनाओं में खर्च किया जाता है।

जब तक भारत में लोकतंत्रात्मक शासन व्यवस्था रहेगी तब तक मीडिया और राजनीति में अन्तर्सम्बन्ध बने रहेंगे। स्वाधीनता आंदोलन के समय और उसके बाद भारत में मूल्यों के संरक्षण संवर्धन तथा उनकी स्थापना का कार्य मीडिया निरंतर कर रही है। यही उसे लोकतंत्र का चौथा स्तम्भ और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का संरक्षक बनाता है। इस पर कोई भी बहस की जाए वह अधूरी रहेगी।

पत्रकारिता और विचार के मध्य अन्योन्याश्रित सम्बन्ध है। पत्रकारिता विचारों के संवहन का सबसे सशक्त माध्यम है। परन्तु पत्रकारिता की वैचारिकी की सबसे महत्वपूर्ण विशिष्टता है उसका समष्टिवादी स्वरूप। समष्टिवादी स्वभाव और संस्कार निरन्तरता में पत्रकारिता के साथ सदैव जीवन्त रहा है। पत्रकारिता के समारम्भ के काल से अद्यतन तक पत्रकारिता सम्पूर्ण समाज को स्पन्दित करता है और उसके हित चिन्तन में संलग्न रहता है। पत्रकारिता के इस वर्तमान के आशय से पत्रकारिता का अतीत भी सम्यक रूप महाषियों और नेताआं का तथ्यपरक–तटस्थ लेखा–जोखा जनता तक पहुँचा देती है। अतः मीडिया और राजनीति एक–दूसरे की सहयोगी बनकर कार्य करती दिखाई देती है।

सन् 1977 में कोलकाता में जब जेम्स आगस्टस हिकी ने भारत में सबसे पहले प्रेस की स्थापना की और 1980 से बंगाल गजट एण्ड कैलकटा जनरल एडवरटाइजर नामक दो पन्नों का अखबार शुरू किया था तब और उसके बाद प्रकाशित समाचार पत्र–पत्रिकाएँ उदन्त मार्तण्ड हरिश्चन्द्र मैगजीन, सर्वहित कारक, प्रजाहित, बनारस अखबार, प्रजाहितेषी, सरस्वती, बाल बोधनी, भारत जीवन, हिन्दी प्रदीप, ब्राम्हण, हिन्दुस्तान, अभ्युदय, प्रताप, कैसरी, कलकत्ता समाचार, स्वतंत्र, विश्वमित्र, विजय, आज, विशाल भारत, त्याग भूमि, हिंदू पंच, जागरण, स्वराज, नसयुग, हरिजन सेवक, विश्वबन्धु, हिन्दू,राष्ट्रीयता, चिंगारी, जनयुग, सनमार्ग आदि ही क्यों न हों, प्रायः आजादी के पूर्व निकले इन सभी समाचार पत्र–पत्रिकाओं पर अपनी नजर गड़ाए रखते हैं तथा व्यवस्था परिवर्तन के बारे में लिाते हैं। स्वतंत्रता के पश्चात् बीते 62 शालों के बाद भी मीडिया पर यह आरोप यथावत् है। व्यवस्था में खामियाँ इतनी अधिक हैं कि यही पत्रकारिता विकास के मॉडल तथा योजनाओं को जनता तक पहुँचाती है। न के वल मीडिया सूचना पहुँचाती है बल्कि जनमानस को इस बात के लिए तैयार करती है कि सुदृढ़ भविष्य के भारत निर्माण तथा अपने राज्य, नगर, ग्राम के हित में किस पार्टी को अपना बहुमूल्य वोट दें।

IJARSCT

International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology

International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal

ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 13, May 2026 Impact Factor: 8.2

fu'd'k –

वर्तमान मीडिया के उद्देश्यों को लेकर दो तरह की विचारधाराएँ प्रचलित हैं। एक मीडिया को शुद्ध व्यवसाय मानते हैं तो दूसरा वर्ग इसे जनसंचार का शक्तिशाली माध्यम होने के कारण जनकल्याण कारक, नैतिक मूल्यों में अभिवर्ध्दाक, विश्व बन्धुत्व और विश्व शांति के लिये महत्वपूर्ण मानता है। दोनों के ही अपने–अपने तर्क हैं। वस्तुतः इन तर्कों के आधार पर कहा जा सकता है कि वर्तमान पत्रकारिता जहाँ व्यवसाय है वहीं परस्पर प्रेम, जानकारी और शक्ति बढ़ाने का माध्यम भी है। बोफोर्स, तेलगी, नोट कांड, भ्रष्टाचार से जुड़ी तमाम धांधलियाँ, भारत की सीमाओं में अवैध घुसपैठ, नकली करेन्सी, हवाला के जरिए धन का आवागमन, आतंवादी गतिविधियाँ और कुछ माह पूर्व आई लिबहान रपट ही क्यों न हो। समाचार पत्र–पत्रिकाओं से वर्तमान का अपने अंग में समाहित किये हुए था। सैद्धांतिक एवं व्यावहारिक रूप से पत्रकारिता ने अपनी रचना धर्मिता को एकरूपता में निरन्तरता प्रदान की है। इसी तथ्य को दृष्टिपथ में रखकर पत्रकारिता को संघर्ष की निरन्तरता का प्रतीक माना जाता है। अतीत के तथ्यों की व्याख्या वर्तमन की दृष्टि से करना समीचीन होता है। वर्तमान दृष्टि से अतीत की व्याख्या में सदैव नवीन तथ्यों के प्रकाश में आने की सम्भावना विद्यमान रहती है। नवीनता वर्तमान की जड़ता को तोड़ता है तथा ऐसे गद्यात्मक विचारों का सृजन करता है जिससे वर्तमान लाभान्वित होता है और इसी से अतीत की वर्तमान में उपादेयता निर्धारित होती है। अतीत से वर्तमान को जोड़ने की आवश्यकता इसीलिए अनिवार्य होती है। कोई भी नागरिक समाज अपने अतीत को विस्मित कर विकास के महत्तम शिखर को स्पर्श नहीं कर पाता है। पत्रकारिता और पत्रकारिता और राजनीति के संबंध रीवा संभाग में भी पारंभ से ही पाये गये है।। यहां पत्रकारिता से राजनीति की ओर जाने वाले बहुत से शिखर पुरुष हुए हैं, जिन्होंने न केवल पत्रकारिता में अपनी पहचान बनाई वरन् राजनीति में भी वे शिखर तक पहुँचे। रीवा संभाग में पत्रकारिता और राजनीति के संबंधों ने संभाग में विकास के लिए बड़ी भूमिका अदा की है यही नहीं रीवा संभाग में पत्रकारिता ने राजनीति के नये सिद्धांतों का भी प्रतिपादित किया है। ऐसे में मुझे यह लगा कि यह विषय मुझे संभाग के संबंध में एक नये ज्ञान के क्षेत्र का द्वार खोलेगा। रीवा संभाग पत्रकारिता और राजनीति दोनों ही क्षेत्रों में अपनी दखल रखता है। यह जरूरी है इस संभाग में राजनीति और पत्रकारिता के आपसी संबंधों के विस्तृत स्वरूप को लोगों के सामने लाया जाय।

lnHk xzUFk lph&

- शर्मा, कुमद, भूमण्डलीयकरण और मीडिया, ग्रन्थ अकादमी, नई दिल्ली, 2003
- डॉ. तिवारी, अर्जुन – आधुनिक पत्रकारिता, विश्वविद्यालय प्रकाशन वारायणसी, 2004
- प्रो. हरिमोहन – सूचना प्रौद्योगिकी और जन माध्यम, तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली, 2002
- डॉ. पाण्डेय, रवि प्रकाश, वैश्वीकरण एवं समाज, शेखर प्रकाशन, इलाहाबाद, 2005
- राजकिशोर – पत्रकारिता के नये परिप्रेक्ष्य, वाणी प्रकाशन, दरियागंज नई दिल्ली, 2007
- सिंह निशांत – पत्रकारिता लेखन कला, ओमेगा पब्लिकेशन नई दिल्ली, 2008
- गप्ता डॉ. यू.सी. – इलेक्ट्रानिक्स मीडिया एवं सूचना प्रोद्योगिकी अर्जुन पब्लिशिंग हाउस नई दिल्ली, 2004
- वधवा, डॉ.एसः भारतीय राजनीति और प्रशासन, अर्जुन पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली 1989।
- मिश्र, डॉ.जे.एस.: राजनीति विज्ञान के सिद्धांत, रवि प्रकाशन वाराणसी 2001।
- त्रिवेदी डॉ.आर.एस.एवं राम डॉ.एम.पी. भारतीय सरकार एवं राजनीति कालेज बुक डिपो जयुपर 1997।

IJARSCT

International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology

International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal

ISSN: 2581-9429

Volume 6, Issue 13, May 2026

Impact Factor: 8.2

- डॉ. एस्. अखिलेश, रीवा दर्शन, गायत्री पब्लिकेशन रीवा 2004
- डॉ. उपाध्याय, अनिल कुमार – पत्रकारिता और जनसंचार, सिद्धांत एवं विकास, भारती प्रकाशन, 2008

Copyright to IJARSCT
www.ijarsct.co.in

DOI: 10.48175/IJARSCT-36062